श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

Address
Here

जुलाई - चतुर्थ, अंक - 20 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

सद्गुरु की पहचान

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

एक स्वरूप बोध के होने पर अनंत-अनंत जीवों को अभय दान मिलता है। और एक आत्म-ज्योति जगने पर वह अनेकानेक आत्मज्योति के जागरण में हेतु निमित्त बन सकती है। जीवनाकांक्षा से व्यक्ति किस प्रकार मुक्त होता है। चिंतन-मनन एवं स्वाध्याय से कुछ फर्क पड़ता है। परंतु मूल हैं-1. सद्गुरु का सत्संग, जिन्हें स्वरूप बोध हो गया है, ऐसे आत्मज्ञानी गुरु का संग 2. प्रमुख कारण है आभ्यंतर साधना।

गुरु कौन? गुरु वही होता है जो जानता है कि किस प्रकार, किस उपाय से शिष्य का मन आत्मा में रमण करता रहे। मूल बात यही है कि कैसे उसे साधना में प्रसन्नता का अनुभव हो सके। प्रसन्नता पूर्वक आत्मगत भावों में रमण कर सके। और यह बात वही सुसाधु, गुरु देख सकता है जो स्वयं आत्मगत भावों में रमण करता है। अन्यथा संभव नहीं है। संसार में सबसे कठिन कार्य कोई है तो वह है चित्त का निरोध। लेकिन सद्गुरु की शरण में यह सहज हो सकता है। यही सद्गुरु की शरण का महत्व है।

गुरु की क्या आवश्यकता है? गुरु उपाय बताता है कि किस समय क्या आवश्यक है। ध्यान आवश्यक है या प्रार्थना या भक्ति या जप या तप या कायोत्सर्ग इत्यादि। साधना भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार बदलती है। जैसे-औषधी वही है परंतु भिन्न-भिन्न रूप से देनी होती है। मूल बात वही है कि कैसे आत्मगत भावों में रमण हो सके।

गुरु दीर्घद्रष्टा होते हैं। उनके पास वह दीर्घ दृष्टि है जिसके माध्यम से शिष्य जो कल जानेगा गुरु उसे आज ही जान लेते हैं। शिष्य की वृत्तियों का मूल कारण क्या है और इसका परिणाम क्या होगा यह भी वह जान लेते हैं। शिष्य के अन्तर का जो रोग है, जो मूल है, अब इन रोगों में सभी रोग आ गए। दुख, क्लेश, जन्म-मरण इत्यादि सारे रोग। इन सबकी दवा गुरु ही कर सकते हैं। क्योंकि गुरु उस रोग के मूल कारण को जानते हैं। ऊपर-ऊपर से कारण कुछ दिखाई देते हैं। लेकिन मूल में कारण कुछ और हैं। जैसे चिकित्सक चिकित्सा कब कर सकता है? जब मूल कारण पकड़ में आ जाए तब कर सकता है। इसीलिए ज्ञानी जन कहते हैं-तुम अपनी बुद्धि से लाख उपाय करो, पर बात नहीं बनती। लेकिन गुरु की शरण में जाते ही बात बन जाती है। क्योंकि गुरु की शरण में जाते ही गुरु मूल कारण को पकड़कर उपाय बता देते हैं। इसीलिए यह भी कहा गया है कि गुरु के प्रति अनन्य अटूट श्रद्धा रहे। जैसे आप चिकित्सक के पास गए फिर वह जो भी दवा दे आप ले लेते हैं। आप यह सवाल नहीं करते कि यही दवा क्यों? उसी प्रकार गुरुजी जो भी उपाय बताएं उसे श्रद्धापूर्वक करना। इस प्रकार दीर्घद्रष्टा का दूसरा अर्थ हुआ-कारण और परिणाम को जानने वाला।

अध्यक्षीय

गुरु पूर्णिमा : श्रद्धा, समर्पण और आत्मजागरण का महापर्व

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

गुरु पूर्णिमा केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की उस महान परम्परा का उत्सव है, जिसने मानव जीवन को ज्ञान, संयम, संस्कार और आत्मोन्नति का मार्ग प्रदान किया है। गुरु वह दिव्य प्रकाश हैं जो अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर आत्मा को उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराते हैं। गुरु के सान्निध्य में व्यक्ति केवल शिक्षित नहीं होता, बल्कि संस्कारित, अनुशासित और चरित्रवान भी बनता है।

जैन दर्शन में गुरु का स्थान अत्यन्त उच्च और पूजनीय माना गया है। अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु-इन पंचपरमेष्ठी में गुरु तत्व साधना, संयम और मोक्षमार्ग का जीवंत स्वरूप है। गुरु हमें केवल शास्त्रों का ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि अपने जीवन के आदर्शों से यह भी सिखाते हैं कि अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, क्षमा और आत्मसंयम को व्यवहार में कैसे उतारा जाए। उनका प्रत्येक उपदेश आत्मकल्याण के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के कल्याण का भी मार्ग प्रशस्त करता है।

आज के भौतिकतावादी युग में ज्ञान के अनेक साधन उपलब्ध हैं, परन्तु जीवन को सही दिशा देने वाला सच्चा मार्गदर्शक केवल गुरु ही हो सकता है। तकनीक हमें सूचना दे सकती है, किन्तु विवेक नहीं, साधन उपलब्ध करा सकती है, किन्तु साधना नहीं, सुविधा दे सकती है, किन्तु जीवन-मूल्यों का निर्माण नहीं कर सकती। यह महान कार्य केवल गुरु के सान्निध्य और उनके आशीर्वाद से ही सम्भव है।

हम सभी का सौभाग्य है कि श्रमण संघ की गौरवशाली परम्परा में पूज्य आचार्य, युवाचार्य एवं समस्त साधु-साध्वी भगवंत निरन्तर धर्मप्रभावना, संस्कार निर्माण और समाज को आध्यात्मिक दिशा प्रदान कर रहे हैं। उनके त्याग, तप, अनुशासन और लोकमंगल की भावना से सम्पूर्ण समाज प्रेरणा प्राप्त करता है। गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा तभी सार्थक होती है, जब हम उनके उपदेशों को अपने जीवन का अंग बनाकर परिवार, समाज और राष्ट्र के हित में कार्य करें।

इस पावन अवसर पर मैं समस्त श्रावक-श्राविकाओं, युवा एवं महिला शक्ति तथा समाज के प्रत्येक सदस्य से आग्रह करता हूँ कि गुरु के प्रति श्रद्धा को केवल पूजन तक सीमित न रखें, बल्कि उनके संदेशों को अपने दैनिक जीवन में उतारने का संकल्प लें। यही गुरु के प्रति हमारी सच्ची गुरु दक्षिणा होगी और यही धर्म, समाज तथा मानवता की सर्वोत्तम सेवा भी होगी।

गुरु पूर्णिमा के इस मंगलमय अवसर पर पूज्य गुरुदेवों के श्रीचरणों में कोटिशः वंदन करते हुए मैं, समस्त समाज को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। गुरु कृपा हम सभी के जीवन में ज्ञान, संयम, सद्भाव और आत्मकल्याण का अखण्ड प्रकाश फैलाती रहे।

सम्पादकीय

बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज BSE का 'Saatvik 100 Index' : वैश्विक अर्थव्यवस्था में जैन जीवन-मूल्यों की बढ़ती स्वीकार्यता

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

19 जून 2026 को Business Standard, Moneycontrol तथा अन्य प्रमुख आर्थिक समाचार माध्यमों ने बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) द्वारा भारत के प्रथम 'BSE Saatvik 100 Index' के शुभारंभ का समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किया। यह सूचकांक BSE 500 में शामिल कंपनियों में से उन 100 कंपनियों का चयन करता है, जिनका व्यवसाय निर्धारित सात्त्विक मानकों के अनुरूप है और जो मांस, शराब, तंबाकू, जुआ तथा अन्य व्यसन या हिंसा - आधारित प्रमुख व्यवसायों से संबद्ध नहीं हैं।

भारतीय पूँजी बाजार के इतिहास में यह केवल एक नया निवेश सूचकांक नहीं है, बल्कि बदलती वैश्विक आर्थिक चेतना का भी प्रतीक है। जब देश का सबसे पुराना और प्रतिष्ठित स्टॉक एक्सचेंज उन कंपनियों को विशेष पहचान देता है जिनका व्यवसाय अहिंसा, संयम और उत्तरदायी व्यापारिक मूल्यों के निकट माना जाता है, तब यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि भविष्य की अर्थव्यवस्था केवल लाभ-हानि के गणित से संचालित नहीं होगीय उसमें नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक मूल्यों का भी महत्वपूर्ण स्थान होगा।

यदि इस पहल को भारतीय दार्शनिक परंपरा के आलोक में देखा जाए तो यह सहज अनुभव होता है कि जिन आदर्शों का प्रतिपादन भगवान महावीर ने लगभग ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व किया था, वही आज आधुनिक आर्थिक विमर्श में Ethical Investing, Responsible Investment और Value-based Investing जैसे सिद्धांतों के रूप में पुनः प्रतिष्ठित हो रहे हैं। अहिंसा, अपरिग्रह, संयम, जीवदया और उत्तरदायी जीवन-ये केवल आध्यात्मिक आदर्श नहीं, बल्कि दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक स्थिरता के भी आधार हैं।

यद्यपि BSE ने इस सूचकांक को किसी धर्म विशेष से नहीं जोड़ा है और यह एक निवेश मानक है, धार्मिक प्रमाणपत्र नहीं, फिर भी इसके मूल सिद्धांत जैन जीवन-दर्शन के अत्यंत समीप दिखाई देते हैं। यही कारण है कि यह पहल जैन समाज के लिए स्वाभाविक रूप से गौरव का विषय है। इसे किसी धार्मिक वर्चस्व के रूप में नहीं, बल्कि उन सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की स्वीकृति के रूप में देखा जाना चाहिए जिन्हें जैन परंपरा ने सहस्राब्दियों से अपने आचरण में जीवित रखा है।

इतिहास साक्षी है कि जैन समाज ने व्यापार और उद्योग को केवल आर्थिक गतिविधि नहीं माना, बल्कि उसे नैतिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ा। असंख्य जैन उद्यमियों ने लाभ के अवसर होने पर भी ऐसे व्यवसायों से दूरी बनाए रखी जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हिंसा, जीवहत्या या व्यसन को बढ़ावा देते थे। यही कारण है कि भारतीय उद्योग-जगत में जैन समाज की पहचान विश्वास, पारदर्शिता और व्यावसायिक नैतिकता से जुड़ी रही है।

(शेष पृष्ठ 5 में)

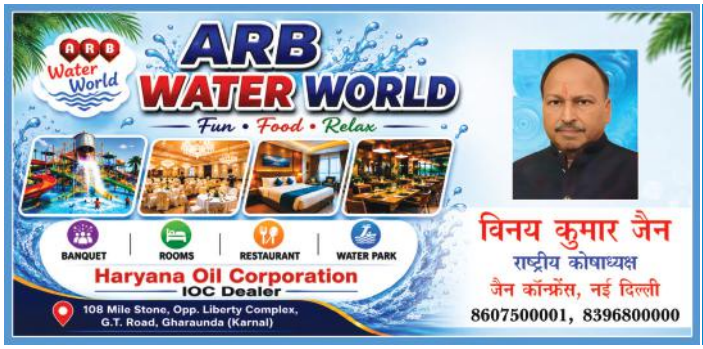

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल ढल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्मानीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

अनेकांत-दृष्टि का प्रतीक श्रमण संघ

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

जिनकी दृष्टि विशाल, साधना गंभीर, ज्ञान निर्मल तथा सिद्धांत भी त्रिकालाबाधित है ऐसे शासनपति प्रभु महावीर का शासन हमें प्राप्त हुआ है। हमारे श्रमण संघ के संस्थापक पुरोधा महान संतो ने इसीलिए श्रमण संघ को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के नाम से संबोधित किया, इसलिये इस संघ को उस प्रभु महावीर के वर्धमान नाम से जोड़ा क्योंकि इस नाम में संघ के उद्देश्य संघ का स्वरूप तथा संघ का महत्व समाविष्ट है।

श्रमण संघ में दृष्टि भगवान महावीर की हो। जिसमें मेरा-तेरापन, राग-द्वेष-ईर्ष्या की भावना न पनपे। रागभाव हमारे भीतर में रही अनेक दुष्वृत्तियों का पोषण करता है। राग में (आसक्ति में) व्यक्ति अपनी कमजोरियों को भी सामर्थ्य मानता है। दुर्गुण को भी सद्गुण मानता है तथा इस वृत्ति का पोषण होता है। जैसे किसी जख्म को दवा मलहम पट्टी करनी हो तो शरीर के प्रति राग भाव उस जख्म को छूने से भी इनकार करता है। उसी तरह व्यक्ति मन के भीतर राग भाव उसे अपने दोषों को देखने में बाधक बनता है। राग भाव में मेरापन पनपता है। जो आत्मदृष्टि से हराकर बहिर्दृष्टि बनाता है। द्वेषभाव हमें औरों के गुणों के प्रति उदासीन बना देता है। द्वेष दृष्टि पीलिया के बीमारी की तरह होती है जिसमें पीलिये में पीडित को हर वस्तु पीली नजर आती है। दोष दृष्टि में हर एक के दुर्गुण ही नजर आते है। द्वेषभाव ईर्ष्या को बढ़ावा देता है। "गुणेष्वसूया" को द्वेष भाव जन्म देता है अर्थात् किसी की विशेषताएं योग्यता भी सामान्य और त्रुटिपूर्ण लगती है। यह राग-द्वेष को वृत्ति दृष्टि संघ-एकता, संघ विकास में बाधक है।

श्रमण संघ के स्थापना से विकास तक ही यात्रा भगवान महावीर की दृष्टि से सम्पन्न है। अनेक सम्प्रदाय धारणा सामाचारी आदि की भिन्नता को विविधता के रूप में स्वीकारा गया। परस्पर में विरुद्ध महसूस होने वाली अनेक बातों को विशेषताओं तथा पूरक के रूप में स्वीकार किया गया। अनेकान्त दृष्टि में जिस तरह अनन्त धर्मों का परस्पर में सामंजस्य स्थापित किया जाता है। अस्ति जीव नास्ति जीव अर्थात जीव है, जीव नहीं इन दोनों तत्वों को एक साथ स्वीकार करने वाली अनेकांत (स्याद्वाद) दृष्टि है। स्वद्रव्य क्षेत्र आदि की अपेक्षा जीव है तथा परद्रव्य क्षेत्रादि की अपेक्षा जीव नास्तिरूप है। इसे विस्तारपूर्वक अनेकांत की चर्चा में समझाया गया है। सारांश में हम इतना ही तत्व ग्रहण करें कि अस्ति-नास्ति इन दोनों परस्पर विरोधी संज्ञाओं को भी एक वस्तु में एक स्थान पर स्वीकारने वाला तथा बताने वाला अनेकांत (स्याद्वाद) का सिद्धांत है। अनेकात दृष्टि को आपने भीतर स्थान देने वाला श्रमण संघ 'संघ' है।

संघ में मत भिन्नता, विचार भिन्नता, होने पर भी वह भिन्नता परस्पर को पूरक होती है। जब वहाँ भिन्नताओं के पीछे रही भावना, स्थिति, परिस्थिति का विचार किया जाता है। जब हम राग-द्वेष को पीछे छोड़ भगवान महावीर की वैचारिक स्तर पर अनेकांत दृष्टि तथा भावनात्मक स्तर पर आत्मदृष्टि को अपना लेते है तब संघ की सुदृढ़ता, संघ का सर्वतोन्मुखी विकास, संघ में सामंजस्य अपने आप साकार रूप ग्रहण कर लेते हैं। हमारे महापुरुषों ने अपनी इसी दृष्टि के माध्यम से सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज को नई दिशा, नई ऊर्जा नई गति प्रदान की। साम्प्रदायिक सकीर्णताओं से समाज को ऊपर उठाकर संघ की विशालता प्रदान की। श्रमण संघ को भगवान महावीर की दृष्टि के साथ आगे बढ़ाया। अनेक उतार-चढ़ाव विगत वर्षों में संघ ने देखें, झेले लेकिन श्रमण संघ जयवंत रहा।

अपने उन महापुरुषों की ऊँची-लंबी सोच तथा संघ संगठन में अवदान को लक्ष्य में रखकर यदि संघ गति करता है तो निश्चित ही संघ के गौरव में अभिवृद्धि ही होगी। आज श्रमण संघ का साधु-साध्वी वर्ग प्रबुद्ध है। अपने क्षेत्रों में धर्म प्रभावना का कार्य सुचारू रूपेण ही होगी। आज श्रमण संघ का साधु-साध्वी वर्ग प्रबुद्ध है। अपने क्षेत्रों में धर्म प्रभावना का कार्य सुचारू रूपेण कर रहा है। यह प्रबुद्ध वर्ग संघहित में अपनी ऊर्जा का विनियोग करे। अपने महापुरुषों द्वारा प्रदत्त भगवान महावीर की दृष्टि से अपने कार्य को आगे बढ़ाकर स्नेह, आत्मीयता के साथ समग्र संघ में नवचेतना का संचार करें, यही मंगलभावनाएं!

आत्म धर्म ही जैन धर्म है

- प्रमुख मंत्री पूज्य श्री शिरीष मुनि जी म.सा.

धर्म - संसार में जहाँ धर्म के भिन्न-भिन्न नाम है, वहाँ हमारा धर्म आत्म धर्म है।

जैन धर्म, जैन धर्म तब कहलाता है जब वहाँ आत्म धर्म हो। इसके अलावा जैन मात्र एक जाति है। इस जाति में जन्म लेने से यानि देह धारण करने से कोई सिद्ध नहीं होगा। परन्तु जो आत्म धर्म में आएगा वो सिद्ध हो जाएगा।

धर्म व अधर्म - तीर्थंकरों ने दो तत्त्व बताए हैं - जीव व अजीव। जीव के धर्म को आत्म धर्म कहते हैं। अजीव को अपना मानकर उसके प्रति मिथ्यात्व व मोह में, मैं व मेरेपन का भाव उत्पन्न किया तो उसे अधर्म कहते हैं।

आत्म धर्म - अर्थात् संसार चल रहा है, पर आप आत्मा अपने धर्म अर्थात् स्वभाव में, स्वरूप में स्थित है। कहीं कोई देह धारण कर रहा है, जिसे संसार जन्म कहता है, कहीं कोई भव परिवर्तन कर रहा है, वो रागी का हो, परिचित का हो, आप स्वरूप में स्थित हैं।

आत्म धर्म के लक्षण - (1) जहाँ प्रार्थना नहीं (2) जहाँ शिकायत नहीं (3) जहाँ प्रतिक्रिया नहीं (4) जहाँ मन मौन साध लेता है (5) जहाँ जीव स्वयं में उतर जाता है (6) जहाँ इन्द्रियों के विषय गौण हो जाते हैं वहाँ जीव स्वरूप में उतर जाता है (7) जहाँ कर्त्ता-भोक्तापन नहीं वहाँ जीव स्वरूप में उतर जाता है (8) मैंने किया, मैं करता हूँ, उसने किया, वो करता है, वो नहीं करता है, मैं करूंगा आदि-आदि सब छूट जाता है। ऐसे आत्म धर्म का पालन करें उससे सब कर्म छूट जाएंगे, मुक्ति इसी से मिलेगी। इसी मार्ग पर चलकर अनंत जीव सिद्ध हुए व होंगे, तो हमें सभी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविकाओं को आत्म धर्म का पालन करते हुए आत्म धर्म में बने रहने का पुरुषार्थ करना है।

चातुर्मास में - (1) प्रत्येक अनुष्ठान में जीव का धर्म, ज्ञाता द्रष्टा भाव केन्द्र बिन्दू बना रहे, पुद्गल गौण हो। (2) हेय-ज्ञेय उपादेय का भान रहे। (3) मिथ्यात्व व मोह का त्याग करें। (4) वैराग्य का आचरण हो, मैं आत्मा समृद्ध सम्पन्न, अष्ठ गुणों से युक्त हूँ। मुझे जगत से कुछ नहीं चाहिए। (5) एक पुद्गल से भी मुझ जीव का वास्ता नहीं। (6) वीतरागता ही मेरा लक्ष्य है, मैं अपने लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ूंगा।

व्यवहार धर्म के अंतर्गत चातुर्मास काल में - (1) स्वाध्याय, ध्यान मुख्य रहे (2) प्रवचन अध्यात्म से परिपूर्ण हो (3) प्रातःकाल आत्म-ध्यान के प्रयोग हो (4) प्रवचन में वीतराग वाणी की प्रमुखता हो (5) बाल संस्कार में तत्व ज्ञान मुख्य रहे।

प्रत्येक के जीवन में आनन्द, शांति, सुख, समृद्धि, ज्ञान, सम्पन्नता, परिपूर्णता का अनुभव हो, ऐसा हम सबका पुरुषार्थ हो। चातुर्मास की आध्यात्मिकता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जापान की राष्ट्रमाता

बालक, बालक न रह गया था। वह युवा हो चुका था। जब वह बालक था तब स्कूल में उसने एक गीत सुना था-देश की रक्षा कौन करेगा? गीत की अगली पंक्ति थी-देश की रक्षा हम करेंगे! बालक का पिता काल की आंखों में आ गया! माँ पीड़ा में डूब गई! पति का वियोग पत्नी को एक संबल थमा गया था-अपनी-सी प्रतिमूर्ति पुत्र। अधपकी उम्र में पति के विछोह का घाव धीरे-धीरे समय की मरहम ने भर दिया। सब्र की साँस आई कि 'वे' नहीं रहे। उनकी स्मृति का सुखाधार पुत्र है। इसी को पढ़ा-लिखा कर बड़ा कर लेंगी। मेरे बुढ़ापे का यही तो अब जीवन या प्राण सब कुछ है!

'माँ, मैं सेना में भर्ती नहीं किया गया।'

'नहीं किया गया तो उदास क्यों है?'

सेनाधिकारी ने कहा-तुम्हारी माँ जीवित है। उसके तुम ही एकमात्र आधार हो! सेना में तुम भर्ती हो जाओगे तो उसकी सेवा कौन करेगा? जाओ! देश-सेवा से पहले मातृ-सेवा करो। माँ मुझे बताओ देश-सेवा मेरा प्रथम कर्तव्य है या माँ की सेवा?

बेटा तू इतनी सी बात पर उदास है? सेवा का जहाँ तक प्रश्न है, माँ की सेवा से देश की सेवा बड़ी है। बेटा! देश की सेवा करने से हजारों मातायें सुख पाती हैं! हजारों बहनों का सुहाग सुरक्षित रहता है। मेरा सुहाग-सिंदूर तो पुँछ चुका है। देश की रक्षा करने से दूसरी लाखों माताओं का सिंदूर उनकी मांग में मुस्कराता रहेगा।

माँ ने ममता से बेटे के सिर पर हाथ फेरा। कहा-बेटा, भोजन कर ले। माँ मैं भोजन नहीं करूँगा। माँ ने पुनः अपने नवजवान बन चुके बेटे से आग्रह किया। बेटा मान गया। उसने भोजन कर लिया। भोजन कर चुकने पर पुत्र के मस्तिष्क में स्कूल का वह गीत रह-रह कर गूंज उठता था-देश की रक्षा हम करेंगे, हम करेंगे। बेटा एक तरफ बैठा था। माँ बिस्तर से उठी, छत पर गई। छत से छलांग लगाकर उसने आत्महत्या कर ली। पुत्र एवं पास-पड़ोस के लोग दौड़े। देखा- बूढ़ा शरीर! दम ही कितना था? वह मात्र लाश बन चुकी है। बूढ़ी माँ के झुर्रियों भरे हाथ की मुट्ठी में रहे कागज के एक पुर्जे की ओर सबका ध्यान गया। बेटे ने पत्र को पढ़ा-

महाभाग,

कृपया मेरे पुत्र को आप सेना में भर्ती कर लें। इसकी देश-भक्ति में मैं बाधक थी! मैं इसके रास्ते से हट रही हूँ। मुझे खुशी होगी-यह सेना में भर्ती हो गया तो हजारों माताओं की रक्षा करेगा। इसे सेना में अवश्य भर्ती कर लेना। इसे एक माँ का नहीं, देश की लाखों माताओं का बेटा बनने देना।

- एक माँ

वह रोया या सुबका नहीं। अगले दिन सेनाधिकारी को उसने माँ का पत्र थमा दिया। सेनाधिकारी सुबक पड़ा। कहने लगा-जापान देश की माताएँ ऐसी होती हैं? मैं तो मानता था, मैं ही देश रक्षा का हिमायती हूँ। पर सच पूछा जाये तो वह माँ ही सच्ची देश माता थी जिसने अपने प्राण न्योछावर कर अपने बेटे को देश की हजारों माताओं का बेटा बन जाने के लिए स्वतंत्र कर दिया। और बेटे को सेना में भर्ती कर लिया गया।

स्थानकवासी जैन समाज के दुर्लभ ऐतिहासिक दस्तावेज श्रृंखला...

अठारहवीं शताब्दी की 'शालिभद्र चौपाई' पांडुलिपि का एक दुर्लभ चित्र

- मोनिका जैन 'दीदी' MA

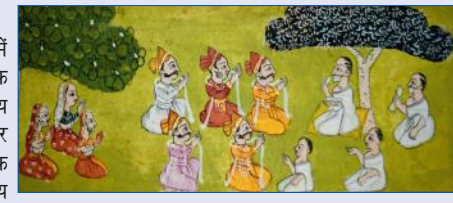

भारतीय पांडुलिपि परंपरा में चित्रित ग्रंथ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि अपने समय के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास के प्रामाणिक दृश्य साक्ष्य भी हैं। शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत में संरक्षित अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध की शालिभद्र चौपाई की यह सचित्र पांडुलिपि स्थानकवासी जैन परंपरा के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और दुर्लभ दस्तावेज है। शालिभद्र चौपाई स्थानकवासी जैन साधुओं द्वारा अपने प्रवचनों में ढ़ाल के रूप में गाई जाने वाली लोकप्रिय पद्य रचना रही है, जिससे तत्कालीन धार्मिक जीवन में काव्य, संगीत और प्रवचन की सुदृढ़ परंपरा का परिचय मिलता है।

इस चित्र का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें वृक्ष के नीचे विराजमान स्थानकवासी जैन साधु अपने मुख पर मुखवस्त्रिका धारण किए हुए उपदेशरत दिखाई देते हैं। उनके समक्ष राजपरिवार, तथा राजा विनम्र मुद्रा में बैठकर प्रवचन का श्रवण करते हुए तथा धार्मिक चर्चा-विमर्श में सहभागी के रूप में चित्रित किए गए हैं। साधु के पार्श्व में नीचे की ओर वैराग्यावस्था में बैठे दो शिष्य भी अंकित हैं, जो स्थानकवासी साधु परंपरा की गुरु-शिष्य परंपरा का सजीव संकेत प्रस्तुत करते हैं। साधु के मुख पर अंकित मुखवस्त्रिका इस बात का अत्यंत दुर्लभ दृश्य प्रमाण है कि अठारहवीं शताब्दी तक स्थानकवासी परंपरा में यह आचार सुव्यवस्थित रूप से प्रचलित था। इस प्रकार के चित्रित साक्ष्य अत्यंत अल्प उपलब्ध हैं और स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास के पुनर्निर्माण में इनका विशेष महत्व है।

चित्र की शैली उत्तर भारतीय राजस्थानी-पश्चिमी भारतीय लघुचित्र परंपरा से प्रभावित प्रतीत होती है। समतल पीताभ-हरित पृष्ठभूमि, शैलीबद्ध वृक्ष, तीक्ष्ण नासिका, लंबी नेत्र रेखाएँ, सीमित छायांकन तथा लाल, केसरिया, गुलाबी और श्वेत रंगों का संतुलित प्रयोग इसे अठारहवीं शताब्दी की चित्रकला का उत्कृष्ट उदाहरण बनाते हैं। चित्रकार ने यथार्थवादी परिप्रेक्ष्य की अपेक्षा कथात्मक प्रस्तुति को महत्व दिया है, जिसके माध्यम से धार्मिक सभा का अनुशासित वातावरण अत्यंत प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

इतिहास, कला एवं जैन अध्ययन के शोधार्थियों के लिए यह पांडुलिपि केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि स्थानकवासी जैन समाज की प्राचीन प्रवचन परंपरा, मुखवस्त्रिका, गुरु-शिष्य संबंध तथा तत्कालीन राजसत्ता और जैन साधु-संघ के मध्य विद्यमान संवाद एवं सम्मानपूर्ण संबंधों का एक महत्त्वपूर्ण दृश्य अभिलेख है। शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत में संरक्षित यह दुर्लभ पांडुलिपि सिद्ध करती है कि चित्रित ग्रंथ भारतीय इतिहास के ऐसे अनेक आयामों को सुरक्षित रखते हैं, जिन्हें केवल लिखित स्रोतों के आधार पर पूर्णतः समझ पाना संभव नहीं है। ऐसी धरोहरों का वैज्ञानिक अध्ययन, संरक्षण और प्रकाशन स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास के प्रामाणिक पुनर्लेखन की दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

चातुर्मास 29 जुलाई से, संयम और संस्कारों से जुड़ेगा समाज

- श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्रमुनि जी म.

जैन धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधना काल चातुर्मास इस वर्ष 29 जुलाई से प्रारंभ होगा। वर्षाऋतु के चार महीनों में जैन साधु-साध्वियाँ एक ही स्थान पर निवास कर आत्मसाधना, स्वाध्याय, प्रवचन, तप, त्याग एवं धर्मप्रभावना के माध्यम से समाज को संयम, सदाचार और नैतिक जीवन का संदेश देंगे। इस अवधि में जैन मंदिरों, स्थानकों एवं उपाश्रयों में धार्मिक आराधनाओं, संस्कारमय कार्यक्रमों तथा आध्यात्मिक गतिविधियों का विशेष वातावरण रहेगा। इस वर्ष पक्खी पर्व होने के कारण चातुर्मास का शुभारंभ 29 जुलाई से होगा। चातुर्मास केवल संतों का स्थिर निवास नहीं, बल्कि समाज के आध्यात्मिक जागरण का चार माह का विशेष अभियान है। इस दौरान प्रतिदिन प्रवचन, स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण, जप, तप, ध्यान, आयंबिल, उपवास, एकासन, पौषध, नवकारसी, भक्ति एवं विभिन्न आराधनाएँ कराई जाती हैं। बड़ी संख्या में श्रद्धालु त्याग, व्रत एवं आत्मसंयम का संकल्प लेकर अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं।

वर्तमान समय में चातुर्मास का महत्व : आज का समाज भौतिक सुख-सुविधाओं, तनाव, प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद और मानसिक अशांति से जूझ रहा है। ऐसे समय में चातुर्मास केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित, अनुशासित और मूल्यनिष्ठ बनाने का अवसर प्रदान करता है।

चातुर्मास व्यक्ति को संयम, आत्मनिरीक्षण, अनुशासन, सादगी, पर्यावरण संरक्षण, जीवदया, नैतिकता और पारिवारिक संस्कारों से जोड़ता है। यह पर्व लोगों को अपनी दिनचर्या सुधारने, क्रोध, लोभ, अहंकार और आसक्ति पर नियंत्रण रखने तथा आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वर्तमान समय में जब मानसिक तनाव और सामाजिक विघटन बढ़ रहा है, तब चातुर्मास का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और आवश्यक बन गया है।

चातुर्मास के प्रमुख पर्व : चातुर्मास के चार माह धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इस दौरान प्रमुख पर्व इस प्रकार है - 29 जुलाई : चातुर्मास प्रारंभ, 08 सितंबर : पर्युषण महापर्व प्रारंभ (श्वेतांबर), 15 सितंबर : संवत्सरी महापर्व एवं दशलक्षण पर्व प्रारंभ (दिगंबर), 25 सितंबर : अनंत चतुर्दशी, 18 अक्टूबर : नवपद आयंबिल ओली प्रारंभ, 09 नवंबर : भगवान महावीर का 2583वाँ निर्वाण कल्याणक, 10 नवंबर : गौतम प्रतिपदा एवं वीर निर्वाण संवत् 2553 का शुभारंभ, 14 नवंबर : ज्ञान पंचमी, 24 नवंबर : चातुर्मास पूर्णाहुति

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ द्वारा वर्ष 2026 में जारी सूची के अनुसार इस वर्ष श्रमण संघीय आचार्य पूजय डॉ. शिवमुनि की आज्ञा में 78 साधु चातुर्मास तथा 284 साध्वी चातुर्मास, कुल 362 चातुर्मास निर्धारित हैं। श्रमण संघ में वर्तमान में 214 साधु एवं 961 साध्वियाँ धर्मप्रभावना में सक्रिय हैं। देश की चारों प्रमुख जैन परंपराओं, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक (मंदिरमार्गी), तेरापंथ एवं दिगंबर सहित वर्तमान में लगभग 19 हजार से अधिक साधु-साध्वियाँ देशभर में धर्म, शिक्षा, संस्कार, नैतिकता, अहिंसा एवं सामाजिक जागरण का कार्य कर रहे हैं।

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 26

श्वास - वर्तमान का द्वार

(गहन विस्तार)

अब तक हमने देखा कि कैसे प्रमाद मन में जन्म लेता है, शरीर में उतरता है, ऊर्जा को असंतुलित करता है। अब प्रश्न है-वापसी कहाँ से शुरू हो? उत्तर सरल है-श्वास से। श्वास ही वह द्वार है जो मन, शरीर और ऊर्जा को जोड़ता है। और वही द्वार है जिससे वर्तमान में प्रवेश संभव है।

1. श्वास सदैव वर्तमान में है : विचार अतीत या भविष्य में जाते हैं। भाव स्मृति से जुड़े होते हैं। कल्पना भविष्य में भागती है। पर श्वास? वह केवल अभी में है। आप कल की श्वास नहीं ले सकते। आप कल की श्वास रोक नहीं सकते। हर श्वास वर्तमान है। इसलिए श्वास वर्तमान का सबसे निकटतम अनुभव है।

2. श्वास और सजगता : जब व्यक्ति श्वास को देखता है, तो विचारों की गति थोड़ी धीमी हो जाती है। श्वास पर ध्यान मन को वर्तमान में लाता है। यह प्रयास नहीं है-यह स्मरण है। श्वास को देखना स्वयं को देखना है।

3. श्वास और Nervous System : धीमी, गहरी श्वास तंत्रिका तंत्र को संकेत देती है-"खतरा नहीं है।" जब श्वास पेट तक जाती है, तो Parasympathetic तंत्र सक्रिय होता है। शरीर ढीला पड़ता है। दिल की धड़कन संतुलित होती है। मन शांत होने लगता है।

4. उथली श्वास-प्रमाद का संकेत : जब व्यक्ति तनाव में होता है, तो श्वास छाती तक सीमित हो जाती है। तेज, उथली, असमान। यह संकेत है कि भीतर भय या नियंत्रण सक्रिय है। यदि केवल श्वास को बदल लिया जाए, तो प्रतिक्रिया की तीव्रता कम हो सकती है।

5. श्वास का अवलोकन : श्वास को नियंत्रित करने से पहले उसे देखना आवश्यक है। आँखें बंद करें। कुछ क्षण बैठें। ध्यान दें-श्वास कहाँ जा रही है? क्या वह पेट तक पहुँच रही है? क्या उसमें रुकावट है? देखना ही परिवर्तन की शुरुआत है।

6. श्वास और भाव : जब कोई तीव्र भावना उठे-क्रोध, भय, आहत होना-तो तुरंत प्रतिक्रिया न दें। तीन गहरी श्वास लें। हर श्वास के साथ पेट को फैलते हुए महसूस करें। भाव की ऊर्जा धीरे-धीरे नरम होने लगती है।

7. श्वास और समर्पण : श्वास अपने आप आती है। आप उसे पैदा नहीं करते। आप उसे रोककर नहीं रख सकते। श्वास स्वयं में एक शिक्षा है जीवन हो रहा है। जब व्यक्ति श्वास को महसूस करता है, तो वह अनुभव करता है कि वह पूर्ण नियंत्रक नहीं है। यह अनुभव कर्ताभाव को ढीला करता है।

8. दैनिक अभ्यास : दिन में कई बार रुकें। कार्य के बीच निर्णय के पहले संवाद के दौरान एक क्षण श्वास को महसूस करें। यह छोटा अभ्यास स्वचालित जीवन को सजग जीवन में बदल सकता है।

9. श्वास से नाभि तक : जब श्वास नाभि तक पहुँचती है, तो स्थिरता आती है। ऊर्जा सिर से उतरती है। छाती नरम होती है। मूलाधार स्थिर होता है। यह अवरोहण प्रमाद से वापसी है।

10. अंतिम स्पष्टता : श्वास केवल जैविक क्रिया नहीं है। वह वर्तमान का द्वार है। वह सजगता का प्रवेश बिंदु है। जब श्वास देखी जाती है, तो मन धीमा होता है। जब मन धीमा होता है, तो प्रमाद कम होता है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-श्वास और तंत्रिका तंत्र का गहरा संबंध।

(क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

जैन संस्कृति के मौन साक्षी : फ्रांसिस बुकानन और गेरुसोप्पा (क्षेमपुर) का ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

भारतीय इतिहास के अनेक ऐसे गौरवशाली अध्याय हैं, जिनकी जानकारी हमें केवल भारतीय ग्रंथों या अभिलेखों से ही नहीं, बल्कि उन विदेशी विद्वानों के यात्रा-वृत्तांतों से भी प्राप्त होती है जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर को निष्पक्ष दृष्टि से देखा और उसे अपने लेखन में सुरक्षित कर दिया। जैन धर्म के इतिहास में ऐसे अनेक विदेशी विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्हीं में एक अत्यंत प्रतिष्ठित नाम है-डॉ. फ्रांसिस बुकानन (Francis Buchanan Hamilton) का। यद्यपि वे मूलतः वनस्पतिशास्त्री, चिकित्सक और भूगोलवेत्ता थे, परंतु उनके यात्रा-विवरण आज भारतीय इतिहास और विशेषतः जैन संस्कृति के अमूल्य स्रोत माने जाते हैं।

फ्रांसिस बुकानन का जन्म 15 फरवरी 1762 को स्कॉटलैंड के स्टर्लिंगशायर में हुआ। उन्होंने एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन किया और बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी की चिकित्सा सेवा में नियुक्त हुए। भारत आगमन के पश्चात उन्होंने केवल चिकित्सक के रूप में ही नहीं, बल्कि एक प्रकृतिविद्, भूगोलवेत्ता, इतिहास-अन्वेषक तथा सर्वेक्षक के रूप में भी असाधारण कार्य किया। वे भारत के विभिन्न प्रांतों में भ्रमण करते हुए वहाँ की वनस्पतियों, कृषि व्यवस्था, सामाजिक जीवन, स्थापत्य, धार्मिक परम्पराओं और ऐतिहासिक स्मारकों का सूक्ष्म अध्ययन करते रहे।

सन् 1800 से 1801 के मध्य तत्कालीन मैसूर राज्य के व्यापक सर्वेक्षण के दौरान बुकानन पश्चिमी कर्नाटक के ऐतिहासिक नगर गेरुसोप्पा, जिसे प्राचीन ग्रंथों में क्षेमपुर भी कहा गया है, पहुँचे। यह नगर कभी जैन धर्म का अत्यंत समृद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र था। राजनीतिक दृष्टि से यद्यपि उस समय इसका वैभव क्षीण हो चुका था, फिर भी वहाँ स्थित जैन मंदिर और स्थापत्य उस गौरवशाली अतीत की सजीव गाथा सुना रहे थे।

गेरुसोप्पा का सर्वाधिक प्रभाव जिस स्मारक ने बुकानन पर डाला, वह था वहाँ का प्रसिद्ध चतुर्मुख बसदि। उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांत में इस जिनालय की स्थापत्य योजना का अत्यंत सूक्ष्म वर्णन किया है। चारों दिशाओं में समान रूप से बने प्रवेश द्वार, सममितीय योजना, विशाल स्तम्भों का संतुलित विन्यास तथा सम्पूर्ण संरचना उन्हें भारतीय वास्तुकला की उत्कृष्ट उपलब्धि प्रतीत हुई। उन्होंने स्पष्ट संकेत किया कि यह भवन केवल धार्मिक आस्था का केन्द्र नहीं, बल्कि उस काल की विकसित अभियान्त्रिकी, स्थापत्य-कौशल और कलात्मक परिपक्वता का अनुपम उदाहरण है।

बसदि के गर्भगृह में प्रतिष्ठित तीर्थंकर प्रतिमाओं ने भी बुकानन को अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने इन प्रतिमाओं के शांत, सौम्य एवं ध्यानमग्न स्वरूप की विशेष प्रशंसा करते हुए लिखा कि पत्थर पर इतनी सूक्ष्म एवं परिष्कृत नक्काशी अद्भुत कलात्मक दक्षता का परिचायक है। एक वैज्ञानिक होने के कारण उन्होंने प्रयुक्त शिलाओं की गुणवत्ता, निर्माण शैली तथा मूर्तिकला के तकनीकी पक्षों का भी ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। उनके विवरण से स्पष्ट होता है कि वे केवल दर्शक नहीं थे, बल्कि प्रत्येक ऐतिहासिक स्मारक का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करने वाले गंभीर शोधकर्ता थे।

बुकानन के यात्रा-वृत्तांत का एक अत्यंत मार्मिक पक्ष यह है कि उन्होंने गेरुसोप्पा की उजड़ी हुई स्थिति का वर्णन करते हुए भी वहाँ के जैन स्मारकों की गरिमा को रेखांकित किया। उन्होंने अनुभव किया कि घने वनों के बीच स्थित ये प्राचीन पत्थर के मंदिर आज भी बीते हुए जैन वैभव की मूक कथा कह रहे हैं। उनके शब्दों में इतिहास के प्रति संवेदनशीलता और भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गहरा सम्मान स्पष्ट दिखाई देता है।

फ्रांसिस बुकानन ने अपने जीवनकाल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों का विस्तृत सर्वेक्षण किया। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में A Journey from Madras through the Countries of Mysore, Canara and Malabar तथा बंगाल और बिहार से सम्बन्धित सर्वेक्षण-रिपोर्टें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन ग्रंथों में केवल भौगोलिक अथवा आर्थिक विवरण ही नहीं, बल्कि तत्कालीन मंदिरों, जैन एवं हिन्दू स्मारकों, अभिलेखों तथा स्थानीय परम्पराओं का भी महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है। यही कारण है कि आज इतिहासकार, पुरातत्त्ववेत्ता और जैन अध्ययन के शोधकर्ता उनके लेखन को अत्यंत विश्वसनीय प्राथमिक स्रोत के रूप में स्वीकार करते हैं।

फ्रांसिस बुकानन का निधन 15 जून 1829 को हुआ, किंतु उनके द्वारा संकलित ऐतिहासिक विवरण आज भी भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन में अमूल्य निधि हैं। जैन धर्म के संदर्भ में उनका योगदान इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उन्होंने ऐसे समय में गेरुसोप्पा जैसे ऐतिहासिक जैन केन्द्रों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया, जब उनके संरक्षण और व्यवस्थित अध्ययन का कार्य प्रारम्भ भी नहीं हुआ था। यदि उनके यात्रा-वृत्तांत उपलब्ध न होते, तो जैन स्थापत्य और दक्षिण भारत के अनेक प्राचीन जैन केन्द्रों के इतिहास के कई महत्वपूर्ण तथ्य आज हमारे सामने न होते।

वास्तव में फ्रांसिस बुकानन उन विदेशी विद्वानों में अग्रणी हैं जिन्होंने भारत को केवल उपनिवेश नहीं, बल्कि एक महान सभ्यता के रूप में देखा। उनकी लेखनी ने जैन संस्कृति के वैभव को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया और आने वाली पीढ़ियों के लिए उसे सुरक्षित भी रखा। जैन दर्शन के विदेशी विद्वानों की श्रृंखला में उनका नाम इसलिए विशेष सम्मान के साथ स्मरणीय है कि उन्होंने निष्पक्ष वैज्ञानिक दृष्टि, ऐतिहासिक संवेदनशीलता और गहन अध्ययन के माध्यम से जैन विरासत के संरक्षण में अप्रत्यक्ष किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन
अभय जैन

महामंत्री
अतुल जैन

कोषाध्यक्ष
अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

जीव दया के साथ स्वबन्धु सेवा भी बने जैन समाज की पहचान

- सुगालचन्द जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

जैन धर्म की आत्मा अहिंसा, जीव दया, करुणा और अनुकम्पा है। जैन समाज ने गौशालाओं, जीव-दया केन्द्रों, पक्षी चिकित्सालयों तथा अन्य सेवा संस्थाओं के माध्यम से मूक प्राणियों की रक्षा में अनुकरणीय योगदान दिया है। यह हमारी गौरवशाली परम्परा है।

किन्तु आज एक प्रश्न समाज के सामने विनम्रतापूर्वक रखना चाहता हूँ। क्या जीवों के प्रति हमारी करुणा अपने ही समाज के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों, विद्यार्थियों और संघर्षरत स्वबन्धुओं तक भी समान रूप से पहुँच रही है? मैं चेन्नई में रहता हूँ। यहाँ जैन समाज द्वारा अनेक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान संचालित हैं, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। किन्तु यह भी एक वास्तविकता है कि आर्थिक रूप से कमजोर जैन विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति अथवा विशेष आर्थिक सहायता की व्यवस्था अपेक्षित स्तर पर दिखाई नहीं देती।

यह किसी संस्था या व्यक्ति की आलोचना नहीं, बल्कि समाज के आत्ममंथन का विषय है। यदि कोई विद्यार्थी केवल आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित रह जाए, तो यह केवल उस परिवार की नहीं, पूरे समाज की क्षति है।

समाज की संस्थाओं के पदाधिकारियों से यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि वे प्रशासन के साथ-साथ समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान को भी अपनी प्राथमिकता बनाएँ। संस्थाओं की वास्तविक सफलता तभी है, जब उनके माध्यम से समाज का अंतिम व्यक्ति भी सम्मानपूर्वक आगे बढ़ सके। मैं जैन आचार्यों, संतों और समाज के प्रबुद्धजनों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि वे इस विषय पर मार्गदर्शन दें। क्या अपने स्वबन्धुओं की सेवा, उनके बच्चों की शिक्षा और जरूरतमंद परिवारों का सहयोग भी धर्म, करुणा और पुण्य का ही एक स्वरूप नहीं है?

यदि इसे केवल पुण्य न भी माना जाए, तो भी यह हमारा सामाजिक, नैतिक और मानवीय दायित्व अवश्य है। आइए, जीव दया की हमारी महान परम्परा को स्वबन्धु सेवा से भी जोड़ें। जिस दिन समाज यह संकल्प लेगा कि आर्थिक अभाव के कारण किसी भी जैन विद्यार्थी की शिक्षा नहीं रुकेगी और कोई भी जरूरतमंद परिवार स्वयं को अकेला महसूस नहीं करेगा, उसी दिन हमारी करुणा अपने वास्तविक अर्थों में पूर्ण होगी। यही सच्ची अनुकम्पा है। यही समाज सेवा है। और यही जैन धर्म के करुणा-दर्शन की वास्तविक अभिव्यक्ति है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') दुर्भाग्यवश, समय-समय पर कुछ राजनीतिक समूहों, कट्टरपंथी प्रवृत्तियों और सामाजिक माध्यमों पर सक्रिय कुछ तत्वों द्वारा जैन समाज की जीवन-पद्धति का उपहास उड़ाने या उसकी अहिंसक परंपरा पर प्रश्नचिह्न लगाने का प्रयास भी किया गया है। कभी जैन साधु-साध्वियों के प्रति अमर्यादित टिप्पणियाँ की जाती हैं, तो कभी जैन धार्मिक स्थलों के आसपास जानबूझकर ऐसे कार्य किए जाते हैं जिनसे धार्मिक भावनाएँ आहत हों। लोकतांत्रिक समाज में मतभेद स्वाभाविक हैं, परंतु किसी समुदाय की आस्था का उपहास करना न तो भारतीय संस्कृति के अनुरूप है और न ही संवैधानिक मूल्यों के।

इसी क्रम में एक और दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति देखने को मिलती है। सोशल मीडिया पर समय-समय पर यह दावा भी प्रसारित किया जाता है कि भारत के बड़े मांस निर्यातक उद्योगों का स्वामित्व जैन समाज के लोगों के पास है। ऐसे दावे प्रायः बिना प्रामाणिक साक्ष्य के पूरे समुदाय को कटघरे में खड़ा करने के उद्देश्य से प्रचारित किए जाते हैं। किसी भी समाज का मूल्यांकन अपुष्ट आरोपों या अपवादस्वरूप उदाहरणों के आधार पर नहीं किया जा सकता। यदि किसी व्यक्ति या कंपनी के संबंध में कोई तथ्य हो तो उसका मूल्यांकन उसी स्तर पर होना चाहिए, पूरे जैन समाज को उसके आधार पर दोषी ठहराना न तो न्यायसंगत है और न ही बौद्धिक ईमानदारी का परिचायक।

ऐसे वातावरण में BSE का 'Saatvik 100 Index' विशेष महत्व प्राप्त करता है। यह पहल किसी विवाद का उत्तर देने के लिए नहीं बनाई गई, किंतु इसका अस्तित्व स्वयं यह सिद्ध करता है कि आधुनिक वित्तीय संस्थान अहिंसक, व्यसन-मुक्त और उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण को निवेश के महत्वपूर्ण मानकों में शामिल कर रहे हैं। यह उन सभी भ्रमों और दुष्प्रचारों का तथ्यात्मक उत्तर है जो जैन समाज के जीवन-मूल्यों को संदेह की दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं।

आज विश्वभर में ESG (Environmental, Social and Governance) उत्तरदायी निवेश और नैतिक वित्त (Ethical Finance) की अवधारणाएँ तीव्र गति से विकसित हो रही हैं। BSE का यह कदम उसी वैश्विक परिवर्तन का भारतीय स्वरूप है। यह इस तथ्य की भी पुष्टि करता है कि भारतीय दर्शन, विशेषकर जैन दर्शन, में निहित अनेक सिद्धांत आज की आर्थिक चुनौतियों के समाधान प्रस्तुत करने की क्षमता रखते हैं।

यह अवसर जैन समाज के लिए भी आत्ममंथन का है। समाज को अपने युवाओं, उद्यमियों और निवेशकों को यह विश्वास दिलाना चाहिए कि आर्थिक समृद्धि और नैतिकता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे की पूरक हैं। यदि विश्व सात्त्विक और उत्तरदायी निवेश की ओर अग्रसर है, तो जैन समाज इस वैचारिक परिवर्तन का स्वाभाविक नेतृत्व कर सकता है।

निस्संदेह, 'BSE Saatvik 100 Index' केवल शेयर बाजार का एक सूचकांक नहीं है, यह इस बदलती वैश्विक चेतना का प्रतीक है कि भविष्य का विकास हिंसा, व्यसन और असीम उपभोग पर नहीं, बल्कि संयम, उत्तरदायित्व, करुणा और नैतिक आचरण पर आधारित होगा। यह उन सभी संकीर्ण दृष्टिकोणों के लिए एक शांत, परंतु अत्यंत प्रभावशाली उत्तर है जो अहिंसा को दुर्बलता समझते हैं। समय ने एक बार फिर सिद्ध किया है कि भगवान महावीर का संदेश केवल आध्यात्मिक जीवन का मार्गदर्शक नहीं, बल्कि आधुनिक अर्थव्यवस्था और वैश्विक व्यापार के लिए भी प्रेरणास्रोत बन सकता है।

जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों के लिये विशेष सूचना

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त आजीवन सदस्यों को सूचनार्थ निवेदन है कि आप आपना नाम, पता, फोटो, मोबाईल नंबर, ई-मेल, आधार कार्ड आदि जानकारी नीचे दिए गए लिंक पर जाकर अपडेट कर सकते हैं। यह लिंक एकदम सुरक्षित है, यह जानकारी आप अपने मित्रों, परिवारजनों आदि को भी शेयर कर हमारा सहयोग कर सकते हैं।

Link - https://jainconference.org/MemberRegistration.aspx

- सम्पादकीय टीम

चातुर्मास काल के दौरान दैनिक प्रवचन सभाओं एवं कार्यक्रमो की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए हम सभी निम्न मर्यादाओं का पालन करने का संकल्प लें

- **स्वागत में सादगी -** समाजहित को दृष्टिगत रखते हुए केवल दानदाताओं (Sponsors) व तपस्वियों का ही साहित्य एवं शॉल से स्वागत किया जाए।
- **सामायिक की मर्यादा -** सामायिक करने वाले स्वयं किसी का स्वागत न करें और न उनसे स्वागत करवाया जाए। यदि सम्मानवश उनका नाम लिया जाए तो वे अपने स्थान पर खड़े होकर 'जय जिनेन्द्र' कहकर अभिवादन स्वीकार करें।
- **समयबद्ध कार्यक्रम -** प्रत्येक वक्ता निर्धारित समय-सीमा का पालन करते हुए अपनी बात पूर्ण करें।
- **कार्यकर्ता का धर्म -** 'सम्मान कम, सेवा अधिक' की भावना से कार्य करें। श्रेष्ठ सेवा ही सबसे बड़ा सम्मान है।
- **फोटोग्राफी की मर्यादा -** प्रवचन हॉल एवं कार्यक्रम स्थल पर केवल अधिकृत फोटोग्राफर, अधिकृत मोबाइल अथवा पत्रकार द्वारा ही फोटोग्राफी की जाए।
- **गुरुदेव के प्रति श्रद्धा -** पूज्य गुरुदेव के साथ फोटो लेने एवं सोशल मीडिया पर साझा करने में पूर्ण विवेक, मर्यादा एवं श्रद्धा का पालन करें।
- **सेल्फी एवं प्रदर्शन से बचें -** धर्मसभा में उपस्थिति का उद्देश्य धर्मश्रवण एवं आत्मकल्याण हो, न कि फोटो, वीडियो अथवा सोशल मीडिया प्रदर्शन।
- **अन्न का सम्मान -** भोजन व्यवस्था में विशेष ध्यान रखा जाए कि जूठा भोजन न पड़े तथा अन्न का अपव्यय न हो। विशेष रूप से महिला मंडल एवं युवा मंडल इस विषय में अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें।
- **धर्मसभा में मौन -** प्रवचन के दौरान आपस में वार्तालाप, अनावश्यक उठना-बैठना एवं आवागमन से बचें।
- **मुखवस्त्रिका एवं सामायिक -** मुखवस्त्रिका धारण करना अनिवार्य हो। सामायिक उपकरण निःशुल्क देने के स्थान पर प्रतीकात्मक राशि अथवा जीवदया दान-पात्र की व्यवस्था की जाए।
- **सामायिक भाव -** जो भी व्यक्ति 50 मिनट या उससे अधिक समय तक धर्मसभा में बैठे, वह सामायिक भाव, संयम एवं श्रद्धा बनाए रखे।
- **समय पालन -** सभी श्रद्धालु धर्मसभा प्रारंभ होने से पूर्व अपने स्थान ग्रहण करें।
- **मोबाइल मर्यादा -** मोबाइल फोन साइलेंट अथवा स्विच ऑफ रखें। आवश्यक होने पर ही बाहर जाकर बात करें।
- **बाल संस्कार -** अभिभावक छोटे बच्चों का विशेष ध्यान रखें, जिससे धर्मसभा की शांति एवं एकाग्रता बनी रहे।
- **मंच की मर्यादा -** मंच पर केवल अधिकृत व्यक्तियों का ही प्रवेश हो।
- **दर्शन व्यवस्था -** पूज्य गुरुदेव के दर्शन एवं वंदना के समय कतार, धैर्य एवं अनुशासन बनाए रखें।
- **सुझाव की मर्यादा -** किसी व्यवस्था में सुधार का सुझाव हो तो संबंधित समिति को विनम्रतापूर्वक अवगत कराएँ।

'धर्मसभा की भव्यता श्रद्धालुओं के अनुशासन, विनय, संयम और धर्मभाव से बढ़ती है। आइए, हम सब मिलकर इन मर्यादाओं का पालन करें और धर्मप्रभावना में सहभागी बनें।'

प्रेषक : किशन बोहरा जैन, वसई मुंबई

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन भवन, नई दिल्ली में जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारणा सभा सम्पन्न

अमृत महोत्सव लाभार्थियों एवं योजना में उत्कृष्ट योगदान प्रदाताओं का स्वागत सम्मान

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा का आयोजन शनिवार, दिनांक 18 जुलाई 2026 को जैन भवन, गोल मार्किट, नई दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री अतुल जी जैन की अध्यक्षता में किया गया।

सभाओं में मंगलाचरण क्रमशः राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन एवं राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जैन द्वारा प्रस्तुत किया गया। तीनों ही सभाओं में सभा के मुख्य बिन्दुओं पर सकारात्मक चर्चायें हुईं तथा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किए गए। मुख्य रूप से संविधान/नियम-उपनियम संशोधन समिति द्वारा प्रस्तुत किए गए संशोधित संविधान को गत् सभा 3 फरवरी 2026 में पारित किए गए प्रस्ताव को सर्वसम्मति से 18 जुलाई 2026 को हुई तीनों ही सभाओं में सर्वसम्मति से पास कर दिया गया।

सभा में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के अमृत महोत्सव 75वाँ के अंतर्गत वर्षभर किए जाने वाले आयोजनों/कार्यक्रमों के विषय में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी विस्तृत जानकारी एवं रूपरेखा से अवगत कराया, जिस पर सदन सदस्यों ने भी अपने सुंदर विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर अमृत महोत्सव कार्यक्रम के लाभार्थियों तथा जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाओं में उत्कृष्ट योगदान प्रदान करने वाले महानुभावों को शॉल, माला द्वारा स्वागत सम्मान कर हर्ष-हर्ष, जय-जय की ध्वनि के साथ अनुमोदना प्रदान की गई।

तीनों ही सभाओं में मुख्य रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जैन, विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमेश भण्डारी जैन, राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन श्री नरेश बोहरा जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय पर्यवेक्षक श्री सुभाष ओसवाल जैन, श्री सत्यभूषण जैन, श्री प्रशांत जैन-'गांधरा', राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री विनय कुमार जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री रजनीश जैन 'राज', राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन के अलावा योजना अध्यक्ष एवं मंत्रगण के अलावा देश भर के राष्ट्रीय/प्रांतीय पदाधिकारीगण एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण उपस्थित हुए। तीनों ही सभाओं का सुंदर संचालन डॉ. अमितराय जैन ने किया। - सम्पादकीय टीम

देशभर में श्रमण संघीय संत-साध्वीवृंद के वर्ष 2026 चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश जारी...

स्थानकवासी जैन समाज की मेवाड़ प्रांत की धार्मिक राजधानी भीलवाड़ा नगर में युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म. एवं साध्वीवृंद के चातुर्मास मंगल प्रवेश

वस्त्रनगरी भीलवाड़ा बनी धर्मनगरी, हजारों श्रद्धालुओं की साक्षी में शांतिभवन में हुआ चातुर्मास मंगल प्रवेश ❊ मंगल प्रवेश का उत्साह चार माह की साधना में बदलें - युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

भीलवाड़ा (राजस्थान) : वस्त्रनगरी भीलवाड़ा में रविवार 19 जुलाई को श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक चेतना का अनुपम संगम देखने को मिला, जब श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म., हितमित भाषी पू. श्री हितेन्द्रऋषिजी, तपस्वी पू. श्री धवलऋषिजी म., पू. श्री महकऋषिजी म., पू. श्री यशोदिप्ती मधुकंवरजी म., उपप्रवर्तिनी पू. श्री दिव्यज्योतिजी म., मधुर व्याख्यानी पू. श्री सुचेताजी म. एवं साध्वी पू. श्री पियूषदर्शनाजी म. सहित साधु-साध्वीवृंद का चातुर्मास मंगल प्रवेश भव्य शोभायात्रा के साथ शांतिभवन, भोपालगंज पहुँचा। शांतिभवन श्रीसंघ के संरक्षक नवरतन बंब, अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद चीपड़, चातुर्मास संयोजक कंवरलाल सूरिया, मदनलाल चोरड़िया, मंत्री नवरतनमल भलावत, सुशील चपलोत, नरेन्द्र भंडारी, मीठालाल सिंघवी, जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय अध्यक्ष आनन्द चपलोत, महावीर नवयुवक मंडल सेवा संस्थान के संरक्षक बाबूलाल सूरिया सहित समाज के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने युवाचार्यश्री एवं साधु-साध्वीवृंद की अगवानी करते हुए अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर मेवाड़ गौरव रविन्द्रमुनि जी म., सेवाभावी महासती ज्ञानकंवरजी म. एवं सांसद दामोदर अग्रवाल की उपस्थिति रही।

चातुर्मास मंगल प्रवेश के अवसर पर युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म. ने समाज की श्रद्धा, समर्पण और उत्साहपूर्ण सहभागिता की सराहना करते हुए कहा कि किसी भी आध्यात्मिक यात्रा का वास्तविक मूल्य उसके भव्य आरंभ में नहीं, बल्कि उसके निरंतर पुरुषार्थ में निहित होता है। समाज ने जिस श्रद्धा, उमंग और भावनाओं के साथ चातुर्मास मंगल प्रवेश को सम्पन्न किया है, वही भावना आगामी चार माह तक साधना, आराधना, स्वाध्याय और आत्मानुशासन के रूप में निरंतर बनी रहनी चाहिए। इस अवसर पर श्रीसंघ के पदाधिकारियों एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए। वहीं नई दिल्ली स्थित अरिहंत नगर से आए प्रतिनिधिमंडल ने युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म. से आगामी वर्ष 2027 के चातुर्मास के लिए विनती प्रस्तुत की। प्रेषक : सुनील चपलोत जैन

दिल्ली की मुख्यमंत्री माननीय श्रीमती रेखा गुप्ता के जन्मदिवस के अवसर पर अयोजित आशीर्वाद कार्यक्रम के अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, प्रांतीय महिला महामंत्री श्रीमती कनिका जैन आदि महिलाओं ने उपस्थित होकर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से शुभकामनाएं प्रदान की।

कविता का कोना

॥ चातुर्मास में संकल्प लें ॥

चातुर्मास का पावन अवसर,
श्रद्धा, भक्ति बढ़ाना है।
जीवन का अनमोल समय है।
इसको नहीं गँवाना है॥

श्री मरूधर केसरी गुरूभ्यो नमः
देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में
नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर
HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd.
नरेश बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान
7666540600 Jainn07@gmail.com
जय गुरू रूप
जय गुरू मरूधर केसरी
जय गुरू सुकन
कोटिशः वंदन नमन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

संघ सेतु, उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवींद्र मुनि जी म. आदि ठाणे 4 का दीक्षा भूमि इन्द्रपुरी में मंगल प्रवेश

इन्द्रपुरी, दिल्ली : संघ, रत्न, संघ सेतु उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरुदेव श्री रवींद्र मुनि जी म. आदि ठाणे 4 का अपनी दीक्षा भूमि इन्द्रपुरी जैन स्थानक में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश भगवान महावीर के जयघोष एवं गुरु भगवंतों के मंगलमय जयकारों के बीच अत्यंत हर्षोल्लास और श्रद्धाभाव के साथ सम्पन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर दिल्ली जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन के अलावा श्री सुरेश कुमार जैन, श्री रजनीश जैन, एस.एस. जैन सभा, प्रशांत विहार के कोषाध्यक्ष श्री तरसेम जैन सहित अनेक गणमान्य श्रद्धालु एवं समाज के प्रमुखजन उपस्थित रहे।

पूज्य उपाध्यायश्री जी ने चातुर्मास के आध्यात्मिक पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित किया तथा चातुर्मास की सफलता हेतु युवाओं और युवतियों को चातुर्मासिक लाभ लेने हेतु विशेष प्रेरित किया। प्रेषक : राजेश जैन, महामंत्री

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

जैन कॉन्फ्रेंस हरियाणा के पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सतीश जैन का देवलोकगमन

यमुनानगर (हरियाणा) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस हरियाणा के पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सतीश जैन का 16 जुलाई को देवलोक गमन हो गया। वे एस.एस. जैन सभा, यमुनानगर के विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर रहकर समाजसेवा एवं धर्मप्रभावना में सक्रिय रहे। उनका व्यक्तित्व सरल, सेवाभावी एवं प्रेरणादायी था तथा वे हरियाणा जैन समाज के प्रमुख स्तंभ थे। आपका स्वास्थ्य कुछ समय से अनुकूल नहीं चल रहा था। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार एवं समाज में यह अपूरणीय क्षति है। प्रेषक : विनय कुमार जैन

श्रीमती रेणू सुदेश भंसाली जैन का स्वर्गवास

पुणे (महाराष्ट्र) : श्रीमान् सुदेश कन्हैयालाल भंसाली जैन की धर्मपत्नी का 59 वर्ष की उम्र में 17 जुलाई को पुणे के हॉस्पिटल में अल्प बिमारी के कारण निधन हो गया। प्रेषक : दर्शन जैन

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

त्रिनगर दिल्ली में प्रज्ञा महर्षि पू. श्री उपेन्द्र मुनि जी म. आदि ठाणा का मंगलमय चातुर्मासिक प्रवेश

त्रिनगर, नई दिल्ली : दिनांक 12 जुलाई को राष्ट्रसंत, प्रज्ञा महर्षि पूज्य गुरुदेव श्री उपेन्द्र मुनि जी महाराज आदि ठाणा-3 का त्रिनगर में चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर त्रिनगर की सड़कों पर श्रद्धालुओं का विशाल जनसमूह उमड़ पड़ा और तीर्थंकरों, आचार्यों एवं पूज्य गुरु भगवंतों के गगनभेदी जयघोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया तथा श्रद्धालुओं में अपूर्व उत्साह का माहौल देखने को मिला।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली, जैन महासंघ दिल्ली तथा स्थानीय एस. एस. जैन सभा द्वारा पूज्य गुरुदेव का भावपूर्ण स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। अपने मंगल प्रवचन में गुरुदेवश्री ने चातुर्मास के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए विशेष रूप से युवाओं एवं युवतियों को धर्माराधना और चातुर्मासिक लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। प्रेषक : अशोक जैन धमाड़, महामंत्री

दुर्ग छत्तीसगढ़ में जैन संत डॉ. मणिभद्र मुनि जी म. का भव्य नगर प्रवेश

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : 19 जुलाई को राष्ट्रसंत मानव मिलन के संस्थापक, नेपाल केसरी परम पूज्य डॉ. मणिभद्र मुनि जी म. आदि ठाणा का दुर्ग नगर में भव्य नगर प्रवेश हुआ। नेहरू नगर से प्रारंभ हुई विहार यात्रा मालवीय नगर स्थित जैन दादाबाड़ी पहुँची। नगर प्रवेश यात्रा में श्रमण संघ परिवार के साथ-साथ सकल जैन समाज के सभी वर्गों एवं विभिन्न संप्रदायों के श्रद्धालु बड़ी संख्या में शामिल हुए। प्रेषक : नवीन संचेती जैन

रोहिणी सेक्टर-5 में उपप्रवर्तक श्री पंकजमुनि जी म. चातुर्मास प्रवेश

दिल्ली : उत्तर भारतीय प्रवर्तक वाणी भूषण पूज्य गुरुदेव श्री अमरमुनि जी म. के सुयोग्य शिष्य उत्तर भारत गौरव उपप्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री पंकज मुनि जी म. एवं गुरु अमर शिष्य श्री वरुण मुनि जी म. आदि ठाणा-3 का रोहिणी सेक्टर-5, दिल्ली में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश श्रद्धा-भक्ति के वातावरण में संपन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर उपप्रवर्तिनी संयम श्रेष्ठ पूज्य महासती श्री मनीषा जी महाराज आदि ठाणा का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिससे कार्यक्रम की गरिमा और अधिक बढ़ गई। चातुर्मास प्रवेश के अवसरपर जैन कॉन्फ्रेंस एवं समाज के गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

दिव्य साधिका महासाध्वी डॉ. रश्मि जी म. का मांगलिक चातुर्मासिक प्रवेश

दिल्ली : दिव्य साधिका उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी डॉ. रश्मि जी म. आदि ठाणा का मांगलिक चातुर्मासिक प्रवेश जैन स्थानक, डेरावाल नगर, दिल्ली में भगवान महावीर एवं गुरु भगवंतों के मंगलमय जयघोष के साथ अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपनीगरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

महासाध्वी मीना जी म. का बंगा (पंजाब) में चातुर्मास प्रवेश

बंगा (पंजाब) : धर्मनगरी बंगा में जैन समाज के लिए अत्यंत हर्ष और सौभाग्य का अवसर रहा, जब श्रुत वारिधि, जैन भारती, कोकिल कंठी महासाध्वी श्री मीना जी म. कर्मठ श्रमणी महासाध्वी श्री मुक्ता जी म., प्रवचन प्रभाविका साध्वी श्री समृद्धि जी म., साध्वी श्री उत्कर्ष जी म., साध्वी श्री समाहि जी म. ठाणे का बंगा में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के शुभ अवसर पर लुधियाना मालेरकोटला, सुल्तानपुर लोधी, नवांशहर आदि क्षेत्रों से गुरु भक्त पधारें। प्रेषक : रोहित जैन

महासाध्वी पू. श्री सुषमा जी म. आदि ठाणा का अहिंसा विहार में चातुर्मास प्रवेश

अहिंसा विहार, दिल्ली : बुधवार 22 जुलाई को जिनशासन चंद्रिका, हरियाणा सिंहनी, महासाध्वी श्री सुंदरी जी महाराज की सुशिष्या, जैन कोकिला, युवा तपस्विनी महासाध्वी श्री सुषमा जी महाराज आदि ठाणा-5 का भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश अहिंसा विहार जैन स्थानक में श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस पावन अवसर पर दिल्ली जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों एवं श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 22-07-2026
Date of Posting : 28/29-07-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 20 ✲ पृष्ठ : 8
माह : जुलाई ✲ सप्ताह : 22 जुलाई से 28 जुलाई

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

स्वतंत्रता सेनानी, सांसद, समाजनायक एवं संगठन-पुरुष सेठ अचल सिंह जैन

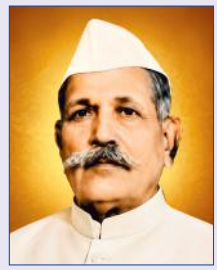

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली इतिहास में स्वतंत्रता सेनानी, सांसद, समाजसेवी एवं संगठन-पुरुष सेठ अचल सिंह जैन का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन में राष्ट्रसेवा, समाजसेवा और जैन संगठन के प्रति समर्पण का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया, जो आज भी प्रेरणास्रोत है।

सेठ अचल सिंह जैन का जन्म ई. सन 1895 में मध्य प्रदेश के धार में एक प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। उनके पिता सेठ पीतमचंद जैन प्रतिष्ठित व्यापारी एवं जमींदार थे। बाल्यकाल से ही उनमें राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना और नेतृत्व के संस्कार विकसित हुए। उन्होंने आगरा के बलवन्त राजपूत कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की तथा आगे कृषि शिक्षा के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, किंतु राष्ट्र की पुकार ने उन्हें अध्ययन छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ने के लिए प्रेरित कर दिया।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अनेक बार जेल गए और कारावास की यातनाएँ सहन कीं। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्रभक्ति, त्याग और निःस्वार्थ सेवा का पर्याय बन गया।

स्वतंत्र भारत की राजनीति में भी उनका योगदान असाधारण रहा। उत्तर प्रदेश के आगरा लोकसभा क्षेत्र के चुनावों की चर्चा सेठ अचल सिंह जैन के उल्लेख के बिना अधूरी मानी जाती है। वर्ष 1952 से 1972 तक वे लगातार पाँच बार आगरा से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए और उन्होंने ऐसा राजनीतिक कीर्तिमान स्थापित किया, जिसे लंबे समय तक कोई पार नहीं कर सका। संसद में वे जनसरोकारों के सशक्त प्रतिनिधि रहे तथा उनकी ईमानदारी, सादगी और जनसेवा के कारण उन्हें सभी दलों में सम्मान प्राप्त था।

उनके सार्वजनिक जीवन की एक अत्यंत प्रेरक घटना यह है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल में सम्मिलित होने का प्रस्ताव दिया, किंतु सेठ अचल सिंह जैन ने अत्यंत विनम्रता से यह कहते हुए उसे स्वीकार नहीं किया कि उस समय अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रति उनका दायित्व अधिक महत्वपूर्ण है। व्यक्तिगत पद और प्रतिष्ठा से ऊपर समाज और संगठन को रखने का यह दुर्लभ उदाहरण आज भी प्रेरणा देता है।

वे अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष रहे तथा बाद में अनेक बार राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद को सुशोभित किया। उनके नेतृत्व में जैन कॉन्फ्रेंस ने राष्ट्रीय स्तर पर नई ऊर्जा प्राप्त की। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के निर्माण तथा उसके उपरांत उत्पन्न परिस्थितियों में उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस को संगठित, सक्रिय और प्रभावशाली बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका नेतृत्व सदैव समन्वयकारी, दूरदर्शी और समाजहितकारी रहा।

सेठ अचल सिंह जैन दूरदर्शी समाजसेवी भी थे। उन्होंने ई. 1965 में लगभग 10,00,000 (दस लाख रुपये) की निधि से "अचल सिंह ट्रस्ट" की स्थापना की। उस समय यह राशि अत्यंत विशाल मानी जाती थी। इस ट्रस्ट के माध्यम से पुस्तकालय, वाचनालय, शिक्षा, चिकित्सा तथा जनकल्याण के अनेक कार्य प्रारम्भ किए गए। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी धर्मपत्नी की स्मृति में लगभग 2,50,000 की राशि से एक अन्य ट्रस्ट की स्थापना की, जिसने भी समाजोपयोगी कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भगवती देवी जैन स्वयं एक प्रभावशाली वक्ता, कुशल संगठनकर्ता और समाज-नेत्री थीं। वे अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा रहीं तथा महिला जागरण, शिक्षा, संस्कार और संगठन के विस्तार में उनका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय रहा। वे समाज में नारी नेतृत्व की सशक्त प्रतीक थीं।

सेठ अचल सिंह जैन एक चिंतक और लेखक भी थे। जेल प्रवास के दौरान उनके आध्यात्मिक एवं वैचारिक चिंतन ने साहित्य का रूप लिया। उनकी दो महत्वपूर्ण कृतियाँ "जेल में जैनाभ्यास" तथा "सफल साधना" आज भी उनके गहन अध्ययन, आध्यात्मिक दृष्टि और जैन दर्शन के प्रति उनकी निष्ठा का प्रमाण हैं।

उनका परिवार भी सेवा और नेतृत्व की इस गौरवशाली परंपरा का संवाहक रहा। उनके पुत्र भी आगरा से सांसद रहे। इस परिवार ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानकवासी जैन समाज, अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं को सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान किया।

सन् 1983 में इस महान राष्ट्रभक्त, समाजसेवी और संगठन-पुरुष का स्वर्गवास हुआ, किंतु उनके द्वारा स्थापित आदर्श, संस्थाएँ और सेवा-परंपरा आज भी समाज को प्रेरित कर रही हैं। उनका जीवन यह संदेश देता है कि सत्ता से बड़ा समाज, पद से बड़ा कर्तव्य और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से बड़ा संगठन होता है।

सेठ अचल सिंह जैन का व्यक्तित्व भारतीय लोकतंत्र, स्वतंत्रता संग्राम, जैन समाज और अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। वे वास्तव में राष्ट्र, समाज और धर्म-तीनों के प्रति समर्पित ऐसे मूर्धन्य व्यक्तित्व थे, जिनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य प्रेरणा-पुंज है।

(शहजाद राय शोध संस्थान बड़ौत में उपलब्ध दुर्लभ दस्तावेजों के आधार पर)

जैन गौरव

हमारा राष्ट्रीय चिन्ह

हमारा राष्ट्रीय चिन्ह जिसे हमने सम्राट अशोक की विरासत के रूप में प्राप्त किया है। यह चिन्ह सम्राट अशोक की शिक्षाओं की स्मृति को जाग्रत करता है, वरन् इस चिन्ह में हमारी असीम सांस्कृतिक विरासत भी झलकती है।

सम्राट अशोक आरम्भिक काल में जैन थे। उनके पिता बिन्दुसार, पितामह चन्द्रगुप्त आदि भी दिगम्बर जैन धर्म की उपासना करते थे, सम्राट अशोक ने बाद में बौद्धधर्म स्वीकार किया। उनके उत्तराधिकारियों ने जैन धर्म की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने अधिकांश शिलालेख प्राकृत भाषा में खुदवाये थे।

सम्राट अशोक के (सारनाथ) स्तम्भों में जैन तीर्थंकरों के चिन्ह अंकित हैं। धर्म चक्र में 24 आरे तीर्थंकरों की संख्या 24 के प्रतीक हैं। चतुर्मुखी सिंह भगवान महावीर का चिन्ह है। बैल, हाथी और घोड़ा क्रमशः भगवान ऋषभदेव, अजितनाथ और संभवनाथ (पहले, दूसरे, तीसरे) तीर्थंकर के चिन्ह हैं।

सामने से देखने पर राष्ट्रीय चिन्ह में तीन सिंह के चेहरे दिखाई देते हैं। इनका चित्रांकन मुलताई जिला बैतूल (म.प्र.) के दीनानाथ भार्गव जी ने बहुत अध्ययन के बाद किया था। उनका मत है कि प्रथम चेहरा नरसिंह का है, दूसरा चेहरा मादा सिंह का तथा तीसरा चेहरा शिशु सिंह का है। यह खुशहाल सिंह परिवार है, जो हमें खुशहाल, प्रसन्नता का संदेश देता है।

जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्यता एवं जैन कॉन्फ्रेंस की विविध योजनाओं के फॉर्म के लिए स्कैन करें :

- जैन कॉन्फ्रेंस आजीवन सदस्यता फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना उच्च शिक्षा सहायता फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना चिकित्सा सहायता फॉर्म
- मानव सेवा योजना (विधवा पेंशन फॉर्म
- जीवदया योजना फॉर्म

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY · JAIN SILKS & READYMADES · varnalaya · JAIN PETRO · OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL · OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित। केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906